45	भक्षक एकांकी और पर्यावरण समस्या	डॉ. संदिप बनसोडे, रामेश्वर देवरे	178
46	भारत मे आतंकवाद की समस्या	दीपक डोंगरे	181
47	रचनात्मक विकास मे निरक्षरता बाधक नही	प्रा. दीप्ती होळकर	184
48	कान्हा कोयला क्षेत्र मे कार्यरत श्रमिको का जीवन स्तर 'जिला छिंदवाडा के संदर्भ मे	डॉ. शशि बाला भट्ट	189
49	भारतीय नारी – सामाजिक शोषण (कहानी विशेष)	डॉ. अरविंद घोडके	198
50	भारत की निर्धनता : रणनीतियाँ और कार्यक्रम	डॉ. जे.एस.धायगुडे	200
51	प्रेमचंद के उपन्यासो में विधवा नारी की समस्या	डॉ. संगीता आहेर	208
52	समकालीन हिंदी ग़ज़लो में चित्रित सामाजिक समस्याएँ	डॉ. सय्यद शौकत अली	211
53	समकालीन हिंदी ग़ज़ल में पूँजीवाद	डॉ. रजनी शिखरे	216
54	भारतीय साहित्य में सामाजिक समस्याएँ (मध्यकालीन संत साहित्य के विशेष संदर्भ में)	डॉ. ललिता राठोड	219
55	हिंदी ग़ज़ल में जीवनमूल्य	डॉ. रजनी शिखरे	222
56	हिंदी साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ	डॉ. रजनी शिखरे, एच. टी. पोट कुले	225
57	भारत में भ्रष्ट्राचार की समस्या	डॉ. आर.के. देशमुख	229
58	भ्रष्ट्राचार	महादेव करडे	233
59	सामाजिक विकास पर पर्यावारणीय प्रभाव	किरण पवार, कविता जोशी	239
60	हिंदी ग़ज़ल में आर्थिक समस्या	डॉ. रजनी शिखरे, डॉ. मनोजकुमार ठोसर	243
61	प्रकृति सौंदर्य के कवि : केदारनाथ अग्रवाल	संतोष नागरे	246
62	दलित साहित्य में समाजिक समस्याएँ (अनुदित आत्मकथा के संदर्भ में)	डॉ. रजनी शिखरे, राजाराम जाधव	251
63	भारत में आतंकवाद की समस्या	डॉ. रमेश व्ही.मोरे	255
64	वैश्विकरण की आंधी में दरकते संस्कार : सिसकते वृद्ध दिमर्श पर एक दृष्टि	ऋचा राय	257

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 200 : Contemporary Problems in India and Remidies
ISSN : 2348-7143
October-2019

भक्षक एकांकी और पर्यावरण समस्या

शोधनिर्देशक
डॉ. संदिप अ. बनसोडे
सहयोगी प्राध्यापक, मराठी विभाग
र. भ. अट्टल महाविद्यालय, गेवराई, जि. बीड.

शोध छात्र
देवरे रामेश्वर गिरधर
नाट्यशास्त्र विभाग,
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा
विश्वविद्यालय, औरंगाबाद.
मो. 7798527273
ई-मेल : rameshwardeore6@gmail.com

कुदरत ने सभी प्राणीयों को जीने के लिए पर्यावरण का निर्माण किया है। सृष्टी का हर एक जीव पर्यावरण से जुडा हुआ है। हमारे आसपास के भौगोलिक वातावरण को हम पर्यावरण कहते है। जिसमें हवा, पाणी, धुप, जंगल, वृक्ष, पशुपक्षी सभी प्रकारके जिव शामील हैं। पृथ्वीपर सबसे बुद्धीमान प्राणी इंसान को कहा जाता हैं, और आज वही इंसान अपनी हुशारी, लालच, अपेंक्षा और घमेंड में अपने स्वार्थ के लिए, पर्यावरण में कई समस्या खडी कर रहा है। मानव नें विज्ञान में जोरोसे प्रगती करके काफी आगे जा चुका है। और इसीके साथ-साथ अपना स्वार्थ हासिल करने के लिए, कुछ भी करने को तयार है, और उसी चाह में अपने हाथोंसे पर्यावरण का नुकसान कर रहा है।

लोकसंख्या बढने के साथ-साथ शहरीकरण औद्योगिकीकरण बढ रहा है, और कई ज्यादा रफ्तारसे पर्यावरणीय समस्या खडी हो रही है, जो भविष्य में पृथ्वीपर आनेवाली पिढ़ीयो, सभी जिवोके लिए घातक है, हमारे चारों तरफ प्रदुषण ही प्रदुषण हो रहा है, लोगोंको नये यंत्र मोटारगाडी, मशीन, सभीकी इतनी आदत पढ़ गई है की, वे चाहकर भी प्रदुषण रोकनेकी कोशीष नही करते। उलटा अपना काम आसान बनाने के लिए पर्यावरण का नुकसान करते जा रहे है। हर तरफ वायु प्रदुषण, जलप्रदुषण, भूमी प्रदुषण और ध्वनी प्रदुषण आए दिन बढते ही जा रहे हैं। उसी में आज एक गंभीर समस्या हैं वृक्षतोड, यानी वृक्षोकी होनेवाली बेसुमार कत्तल। इंसान भुल रहा हैं की, जिस ऑक्सीजन पर वह जिता हैं उसी का निर्माण करणे वाले वृक्षों को विकास के नाम पर वह काट रहा है, ना ही उसके बदले वृक्ष लगा रहा है। इसी गंभीर समस्या की जनजागृती होनी चाहिए। गांव, समाज, शहर, देश, विदेश सभी जगा इस समस्या को दुर्लक्षीत किया जा रहा है। और अब इस समस्या को सबके सामने लाकर उस पर अंकुश लगाने की आवश्यकता है। नाटक एक ऐसा माध्यम है, जो समाज प्रबोधन में बडी महत्त्वपुर्ण भूमीका निभाता है। जिसके मंचित होने के बाद सभी दर्शकों के सामनें उसमें भाष्य किए जाने वाले विषयक की गंभीरता स्पष्ट रूप से बाहर आती है और उस पर सोच विचार करने के लिए नाटक दर्शक को मजबूर करता है।

ऐसे ही एकांकी के माध्यम से विकास के नाम पर जंगलो पर होनेवाला अतिक्रमण और उस वजह से इन्सान और वन्यप्राणी के बीच होनेवाला संघर्ष इस गंभीर पर्यावरणीय समस्या को लेकर रावबा गजमल लिखित-निर्देशीत "भक्षक" इस एकांकी के बारे निर्देशकीय दृष्टी से संशोधक ने शोधपत्र लिखने का प्रयास किया है।

"भक्षक" नाम से एक प्रभावशाली एकांकी का "लोकसत्ता लोकांकिका २०१५-१६ में मंचन किया गया और पुरे महाराष्ट्र में उस एकांकी ने धुम मचा दी। महाराष्ट्र के नाट्यक्षेत्र में किसी भी दर्शक या कलाकार को आचंबित करनेवाला

अनुभव "भक्षक" एकांकी ने दिया। उसमें दिखाई गई पर्यावरणीय समस्या को दर्शक कभी नही भुल सकता और वह सोचने को मजबुर हो जाता है की हमे पर्यावरण के बारे में सोचना चाहिए।

प्रस्तुत एकांकी शुरुवात होते ही जब पडदा उपर उठता है तो दर्शकों के सामने हरे, निले, लाईट दिखाई पडते है। प्रकाश द्वारा रात का गहरा अंधेरा दिखाई देता है और संगीत द्वारा बढे-बढे मशिनों की आवाज जैसे जंगल के वृक्ष तोडे जा रहे है। साथ ही जंगली पशु-पक्षी, अपने घरों पर अचानक कोई आपत्ती आने की वजह से अपने बच्चे, परिवार छोडकर अपनी खुद की जान बचाते भागने लगते है। पर्यावरणीय समस्या का अनुभव दर्शकों को पहले ही ५ मिनिट में निर्देशक ने बडे ही सफलतापूर्वक दिया और यहाँ से ही दर्शक विषय के साथ एकरुप हो जाते है। जैसे की वे खुद जंगल में बैठे हो। अचानक जंगली प्राणी में से एक जंगली शेर गाव की बस्ती में घुस जाता है। और पुरी बस्ती के लोग अपनी जान बचाते बचाते घर दार छोडकर एक दुसरे को बताते जोरो से चिल्लाकर मंदीर के पास सबको इकठ्ठा जमा होने को कहते है। इस एकांकी में लेखक निर्देशक ने सिर्फ ९ पात्रों द्वारा नाटक को खेला है। जिसमे एक महिला, एक युवक शेर की भूमिका है। और एक बुढ़ा है, बाकी ६ गाव के २५ से ४० तक की उम्र के है। शेर की भूमिका करने वाले कलाकार ने बहुत सहजता से पुरे रंगमंचपर घुटनों और हातों पर चलकर अपने शारिरीक हावभाव से हुबेहुब जंगली शेर का जीवंत अभिनय किया है। बाकी कलाकारों के कपडे, बोलने का लहजा और रंगमंच पर घुमने की सहजता दर्शकों के सामने गाव का माहोल खडा कर देते है। सभी कालाकारों के हाथ में शेर से खुद का बचाव करने के लिए एक लकडी है। डर के कारण लोग भागने लगे और उसी में एक बच्चे की माँ भी है जिसे अपने घर से बहुत दुर आने के बाद समजता है कि उसका एक साल भर का बच्चा झोली में रह गया। अब यहाँ से और भी गंभीर समस्या दर्शकों के सामने प्रश्न निर्माण करती है । अब उस बच्चे का क्या होगा ? जब औरत को पता चलता है कि वो खुद का बच्चा जल्दी में गलती से घर भूल आयी हैं तो खुद का होश संभाल नही पाती और बेहोश हो जाती है। दुसरी तरफ कुछ लोग शेर का पिछा करते करते एकसाथ घुम रहे है। और कुछ उस औरत के बच्चे को लाने के लिए वापस घर के और निकलते है। लेखक ने रात में चाँद की रोशनी का भी याद से उल्लेख किया है। अब आगे शेर को बच्चे की रोने की आवाज आती है। और उसी के सहारे बच्चे के पास पहूँचता है। और खुष हो जाता है जैसे उसे कोई शिकार मिली हो। लेकीन शेर जब बच्चे की मासूमीयत को देखकर शांत हो जाता है। और बच्चे के साथ कुछ समय खेलकर लोगों की आवाज आते ही वहाँ से भाग जाता है। घर में लोग आते ही बच्चे को सहीसलामत पाते है और भगवान का शुक्र गुजार करते है। और बच्चे को उसकी माँ के पास ले जाते है। यह नाट्य प्रसंग तालियाँ बटोरता है। शेर देखते ही लोगों के होश उड जाते है। और कलाकार एक दुसरे को सावधानी रखने की बात करता है। और खुद पर शेर की नजर बना लेता है। और दुसरे को शेर की सिर पर वार करने की बात करता है। उनकी झटापटी में एक आदमी घायल हो जाता है और शेर भाग जाता है। अब और कुछ लोग जमा होकर शेर को ढुंढने लगे। और शेर देखते ही उसपर वार करना शुरु कर दिया। शेर भी सभीपर खुद की जान बचा लेने के लिए हमला करता है और घायल हो जाता है। आखिर में और जोरो से मशिनों की आवाज सुनाई देती है और तब एक बुढा आदमी गुस्सें में बोलने लगता है।

'बंद करो बंद करो तुम्हारे इस अतिक्रमण की वजह से जंगली प्राणी हम पर अतिक्रमन कर रहे है। और हम एक दुसरे की शिकार हो रहे है। यह वाक्य एकांकी को गहरा अर्थ देता है।

आखिर में निर्देशक ने विषय की गंभीरता को दर्शको के ऊपर छोडा है। जो की एक शेर मरने के बाद और दुसरी तरफ से दुसरे शेर की आवाज आने लगती है। और अचानक चाँद की रोशनी कम होने लगती है। और सब लोग अपनी जान बचाने की कोशिश में भाँगने लगते है। और पडदा गिरने लगता है।

प्रस्तुत एकांकी में निर्देशक ने शुरुवात से लेकर घटना पुरी होने के बाद आखिरी में फिर प्रश्न उपस्थित किया है जबतक जंगल पर होनेवाला अतिक्रमण रुकेगा नहीं तब तक एक-एक जंगली प्राणी जंगल से निकलकर गांव में या कहीं भी भूख, प्यास की तलाश में आएँगे। जिससे पशु और मानव को बडी परेशानि का सामना करना पडेगा।

नाटक का जन्म ही मनोरंजन तथा जनजागृती के साथ सामाज प्रबोधन करने के लिए हुआ है। कई लेखक, निर्देशकों ने सफलतापूर्वक पर्यावरणीय समस्या को अपने नाटकों से दर्शकों के सामने मंचीत किया है। आधुनिक भारतीय रंगभूमीपर हबीब तनवीर जैसे महान निर्देशक ने लंदन से पदवी प्राप्त करने के बाद स्वदेश आकर शहरों, बड़े सभागारों में सिमटने के बजाए देहात में जाकर वहाँ के लोक कलाकारों को अपने नाटकों में शामील करके सामाजिक, राजकीय तथा निर्माण होनेवाली पर्यावरण समस्या को दर्शकों के सामने प्रस्तुत किए और समाज प्रबोधन हेतु उल्लेखनीय कार्य किया है।

तापडीया नाट्य मंदीर में आयोजित उर्दू नाट्यप्रतियोगीता में परिंदों की अदालत यह नाटक प्रस्तुत किया गया जिससे अंदर परिंदों ने इन्सान को अदालत के कटघरे में खडे किया। और उनसे पुछा गया की तुम्हारे इस लापरवाही की वजह से पर्यावरण का नुकसान करने से हमारा जिना मुश्किल हुआ है और इन्सान परिंदों से माफी माँगकर आगे से ऐसा नहीं होगा और तुम्हारे जिवन में हमसे कोई बाधा नहीं आयेगी ऐसा आश्वासन देता है।

मै राजा तु प्रधान इस असलम शेख लिखित नाटक में हमें पर्यावरण के मुद्दो पर अहेम चर्चाएँ देखने को मिलती है। कि किस तरीके से प्रधान पर्यावरण हेतू सही कार्य करता है। और उसी का कार्य देखकर राजा कहता है। अब तु राजा बन जा मैं प्रधान होता हूँ। इसके अंदर जो बांते बताई है जो पर्यावरण से संबंधीत है। सुंदर पर्यावरण की देखभाल होनी चाहिए। पानी का इस्तेमाल कम करना चाहिए। आदि मुद्दोंपर भाष्य करने की कोशिश की गई है।

हम बचपन से सिखते और सिखाते आ रहे है। पेड लगाओ, पेड बचाओ, वृक्ष लगाओ हरीतक्रांती लाओ। लेकीन फिर भी थोडी जरूरत के लिए हम पेड़ लगाने की बजाय उसे कम करने में ज्यादा अग्रणी है। तो आज मानव को निर्माण होनेवाली पर्यावरण समस्या पर अंकुश लगाने की कोशिश करनी चाहिए।

आज हम न्यूज और अखबारों साथ ही अपने आस-पास रोज देख रहें हे कि दिनबदीन जंगलों की कत्तल जोरों से शुरु है। वन्य जीवों की संख्या कम होती जा रही है, बारिश समयपर नहीं हो रही है होती भी है तो कई पर हद से ज्यादा तो कई कुछ भी नहीं। कई लोग बाढ़ से मर रहे हैं, तो कई पानी पीने के लिए भी नहीं मिल रहा है। धूप ज्यादा होने के वजह से तापमान में बढोतरी हो रही है। पेड़ कम होने से पर्यावरण का पूरा समतोल बिघड रहा है। इन्सान पर्यावरण पर ध्यान देने के बजाए इंटरनेट, बाकी यांत्रिक चिजों में उलझा हुआ है। सरकार युवकों, छात्रों सभी लोगों को एक साथ आकर पर्यावरण को बचाने के लिए, जंगल की कटाई बंद करने के लिए आवाहन कर रहा है। हम सभी को पर्यावरण को बचाए रखने के लिए प्रयास करने की जरुरत है और पर्यावरणीय समस्याओं पर संशोधन करने की आवश्यकता है।

प्रस्तुत विषय में भक्षक एकांकी में काफी परिणामकारक तथा सफलतापुर्वक लेखक निर्देशक ने अपने कलाकारों से एकांकी का मंचन करके दर्शकों के सामने पर्यावरण की वृक्ष तोड एक गंभीर समस्या पर प्रकाश डाला गया है।

संदर्भ :

१. भक्षक - रावबा गजमल
२. मुलाखत - रावबा गजमल
३. लोकसत्ता लोकांकिका - २०१५-१६ (YouTube Channel)
४. रंग हबीब - भारतरत्न भार्गव
५. परिंदों की अदालत - ऊर्दु नाट्य
६. मी राजा तू प्रधान - असलम शेख